सावधान: सच्चाई के शासन

एक तरफ सजाया गया हुआ मकान आग की आगोश में है, वहीं दूसरी ओर ज़ोरों से बजता भोंपू पुरुष-सत्ता के गुणगान गा रहा है। उस मकान से कोई भी बाहर भागता नहीं दिख रहा, सिवाए एक महिला के जो आग से लड़ रही है। क्या उस मकान में और कोई नहीं है, या उसमें रहने वालों कोयकीन हो गया है कि आग की लपटें सिर्फ एक वहम है?

गुलामी के दिनों में फिरांगी सरकार द्वारा बनाए गए कानून और नौकरशाही को स्थापित करने तथा उसे स्वीकृत बनाने का काम आज के दौर में पूरा होता सा दिख रहा है। ऐसा इसलिए क्योंकि आजादी के बाद भारतीय सरकारें इन ढांचों का इस्तेमाल नई साम्राज्यवादी एजेंडे को लागू करने के लिए कर रही है। सावधान शब्द इस विचित्र द्वंद के माहौल को बयां करता है, जो आज इस देश में बना हुआ है। इस माहौल को अरको दतो की रात के वक्त ली गई वो तस्वीरें बखूबी बयां करती हैं। नागरिक के पास यूं तो दो रास्ते होते हैं। पहला, सत्ता की ताल पर राग आलापना और उसके दिखाए रास्ते पर चल पड़ना। दूसरा, हमेशा हमले या डर की परछांई में जिंदगी बिताना। हालांकि, उनके पास एक तीसरा रास्ता भी है, जो अंधेरे से भरा है।

मांदिप राईखी के द्वारा निंदेषित नृत्य और समर ग्रेवाल के संगीत से सजी प्रस्तुति अटेंशन में झूमते हुए जिस्म आज के दौर के हिंदुस्तान में विचारधारा को लेकर हो रहे अंधाधुंध प्रचार को दर्शाते हैं। सत्ता पर काबिज भारतीय जनता पार्टी (बी.जे.पी.) और उसके विचारधारा का श्रोत राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने हिन्दुत्व का प्रचार करने के लिए हर तरह के साधनों का उपयोग किया है, चाहे वह स्कूल की किताब हों या फिर वाट्सअेप ग्रुप्स। हिन्दुत्व का लक्ष्य हिन्दु राष्ट्रवाद का प्रचार और हिन्दु राष्ट्र की स्थापना है। और तो और, हिन्दुत्व के इस नजरिए को राष्ट्रवाद के साथ जोड़ दिया जाता है।

भाजपा नरेन्द्र मोदी के विशाल छवि का फायदा उठाकर और विकास के वायदों के दम पर सत्ता में आई। वैसे तो जिस विकास के वायदे भाजपा ने सरकार बनाने के लिए किए थे, वो हकीकत में नदारत है। लोगों का ध्यान बंटाए रखने के लिए और विकास के ज़ुमले पर पर्दा डालने के लिए बेवकूफियों से भरे पैंतरे अपनाए जाते रहे हैं। ये बेतुके पैंतरे विदिशा सायनी के एबर्सडिस्ट थियेटर में देखने को मिलते हैं। विकास के मुखौटे का सच जाहिर ना हो, इसके लिए नेता बिकाऊ मीडिया और झूठी खबरों का बाजार गर्म करते रहते हैं। इस जोड़-तोड की राजनीति के कारण कई कहानियां पैदा की जाती हैं और फिर ये समझना मुश्किल हो जाता है कि क्या सच है और क्या झूठ। ये जो झूठ-सच का खेल चल रहा है, उसे असिम वाकिफ़ हकीकत और सपने के दर्मयां जो अंतर है, उसे धुंधलाकर पेश करने में इस्तेमाल करते हैं। अखबारों और समाचार चैनलों में नोटबंदी को लेकर जिस तरह की खबरें चल रही थीं, वे राज्य का मीडिया के ऊपर गहरे नियंत्रण को दर्शाता है। विशाल कुमारास्वामी द्वारा बनाए गए वीडियो में नोटबंदी से संबंधित उन रिपोर्ट को दर्शाया गया है जिनको लेकर आम तौर पर लोकप्रिय मीडिया में चर्चा नहीं होती।

सरकार के लिए मीडिया को काबू में रखना तब काफी आसान हो जाता है, जब सरकार के साथ अच्छे संबंध रखने वाले व्यासायिक घराने जैसे कि रिलायंस इंडस्ट्रीज, मीडिया संस्थानों में अपना पैसा लगा कर रखते हैं। वे मीड़िया संस्थानों के मालिकों को धमकी देने और उनपर दबाव बनाने से बाज़ नहीं आते, जिसके कारण आजकल मीडिया, खास करके संपादकों के बीच डर का माहौल एक आम बात है। सिर्फ मीडिया इस डर का शिकार नहीं है, भाजपा ने अपने आईटी सेल और वाट्सअैप सेना को हमारे समाज के दिलो-दिमाग पर डर का साम्राज्य कायम करने के लिए काम पर लगा रखा है। मुसलमानों के लिए यह वक्त चुनौतियों से भरा है। मुसलमान समुदाय के खिलाफ एक अघोषित युद्ध सा चलता जान पड़ता है। गोमांस पर प्रतिबंध को "गौ माता" की रक्षा के लिए उठाए गए कदमों में गिनाया जाता है। पर असलियत में गौरक्षा के नाम पर भीड़ ने कई मुसलमानों को पीट-पीट कर मौत के घाट उतार दिया है। साराह नक़वी ने जिस खास कसीदेकारी से मूर्तियों को उकेरा है उसमें उनके परिवार के बीते हुए वक्त की यादें साफ दिखती है। मुसलमानों के ख़िलाफ हिंसा की राजनीति को 2002 में गोधरा में हुई हिंसा के बाद से काफी बल मिला है, क्योंकि ऐसी हिंसा की निंदा करने और जिम्मेदारी तय करने की संस्कृति ही खत्म हो गई है। इस कारण नफ़रत की राजनीति अंजाम की परवाह किए बिना बढ़ती ही जा रही है। संकेत जाड़िया के चित्र मीडिया में ऐसी घटनाओं पर खबरों की राजनीति का मुल्यांकन करते हैं। वहीं दूसरी तरफ, दलितों तथा नीची जातियों पर होने वाली हिंसा भारतीय उपमहाद्वीप में सदियों से चली आ रही है। आज के दौर में भी जातीय हिंसा, समाज के बढ़ते विभाजन और पुलिस के नकारे रवैये के कारण रूकने का नाम नहीं ले रही है। उंच्ची जातियों से आने वाले सम्पादक और पत्रकारों का मीडिया पर एकाधिकार होने की वज़ह से दलित समाज से सरोकार रखने वाली खबरों का गलत मतलब निकाला जाता है। माहाराष्ट्र के भीमा-कोरेबगांव में हुई झड़प और हिसा को मीडिया द्वारा जिस तरह चलाया गया, वह इसका एक अच्छा उदाहरण है। स्मीता राजमाने ने इसका विशलेषण बखूबी अपने अभिलेख में किया है।

लगातार डर और झूठ का माहौल बनाकर हिन्दुस्तान के लोकतांत्रिक प्रक्रिया को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की जा रही है। जब भी हम सच के बजाय सुरक्षा को चुनते हैं उस वक्त हम अपने नागरिक होने के अधिकार से हाथ धो बैठते हैं और हमारे लोकतांत्रिक ढांचे को जाने-अनजाने कमज़ोर बना डालते है। पत्रकार रविश कुमार के हिसाब से हिम्मत और उतावलेपन के बीच का फर्क डर के इस माहौल में साफ तौर पर समझ आता है। पायल आर्य इस तर्क का विश्लेषण अपनी प्रस्तुति में करती हैं और यह ज़ाहिर करती हैं।

परंजोय गूहा थार्कुता मीडिया के आने वाले कल की कल्पना लोकतांत्रिक स्वरुप में करते हैं। "मीडिया सरकार और समाज को ज्यादा पार्दशी बनाने, धांधली रोकने और जवाबदारी मांगने में सक्षम होगा"। कुछ मीडिया समुहों नागरिक के सूचना पाने के खोए हुए अधिकारों को वापस लौटा रहे हैं क्योंकि वे सूचना को सार्वजनिक अधिकार की तरह देखते हैं। विडियो वोलंटियर नाम के एक मीडिया नेटवर्क ने हिन्दुस्तान भर से 250 स्वयंसेवी पत्रकारों का एक ग्रपु खड़ा किया है। इस नेटवर्क द्वारा वीडियो प्रोडक्सन का सहारा लेकर घटनाओं को आम लोगों के अनुभवों से जोड़कर दर्शाया जाता है। वहीं दूसरी ओर, द वायर जैसे बहु-भाषी डिजिटल पत्रकारिता करने वाले समूह की बात करना भी काफी जरुरी है। विश्लेषनात्मक पत्रकारिता में द वायर का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जहां आज के दौर में मीडिया संस्थान राजनैतिक दबाव और ढांचेगत कमजोरियों से जूझ रहे हैं, वहां द वायर जैसे संस्थानों का वित्तीय रुप से स्वतंत्र होना और बिना दखलअंदाज़ी के संपादकीय जिम्मेदारी को निभा पाना, किसी उपली से कम नहीं है। साथ ही, आल्ट न्यूज़ जैसे संस्थान हिन्दुस्थान में चल रहे फासीवादी मुहिम को नाकाम करने में जुटे हैं। आजकल, झूठी खबर फैलाना फासीवादी मुहिम को अंजाम तक पहुंचाने के लिए एक हथियार के रुप में इस्तेमाल किया जाता है। आल्ट न्यूज़ खोजी पत्रकारिता के डिजिटल और पारंपरिक तौर-तरीकों को अपनाकर उनपर लगाम लगाने में जुटा है।

दूसरी ओर, मीडिया के पारंपरिक स्वरुपों को रचनात्मक कलाओं के साथ जोड़कर खबरें पहुंचाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। आर जे शिखा मंडी संथाली भाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए सामूहिक रेडियो का इस्तेमाल करती हैं। उनके दो घंटे का रेडियो कार्यक्रम जोहार झारग्राम में सामाजिक मुद्दों को व्यंग और लोक-गीत के माध्यम से पेश किया जाता है, जिसके कारण स्थानीय लोग के बीच यह कार्यक्रम काफी लोकप्रिय है। वहीं, वर्तमान में जाईन या पत्रिकाओं के माध्यम से आज के युवा कलाकार, चित्रकार और कवि अपनी बातों को लोगों तक पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं। ये पत्रिकाएं, अन्य पत्रिकाओं से काफी अलग हैं और एक तरीके से बंधन मुक्त हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि ऐसी पत्रिकाओं को युवां बिना किसी दखलअंदाज़ी के प्रकाशित करते हैं और फोटोकॉपी द्वारा उनकी प्रतियां बांटी जाती है।

आज हम जिस मुश्किल वक्त का सामना कर रहे हैं, उसे ध्यान में रखते हुए हमें अपने सामाजिक दायरों से ऊपर उठकर सभी की समान रुप से परवाह करने की जरुरत है। तभी हम इस फरेब, नफ़रत और फूट डालने की राजनीति से परे हटकर एक ऐसे समाज की कल्पना कर सकते हैं, जहां विभिन्नताओं को खुशी-खुशी अपनाया जाएगा। अब हम पहले की तरह एक निष्क्रिय उपभोक्ता की तरह केवल सूचनाएं ग्रहण नहीं करते, बल्कि हम फोन, कंप्यूटर के द्वारा उन सूचनाओं के प्रसार में भी योगदान देते हैं। हमारे द्वारा सोशल मीडिया पर लिखा गया हर पोस्ट और साझा की गई हर तसवीर खबरों की असीम दुनिया में एक कड़ी बन जाती है। इंटरनेट ने हमें दुनिया से जोड़ा तो है, पर साथ ही साथ हमारे हाथों में खबरों को फैलाने का एक हथियार थमा दिया है। इस वक्त में क्या हमें अपने जिम्मेदारियों का अहसास है?

Shaunak Mahbubani © 2018
apexart Open Call Exhibition

This exhibition is part 2 of Shaunak Mahbubani's series Allies for the Uncertain Futures.

Venue
Kalakar Theater,
Saidul-Ajaib,
New Delhi, India

October 7–November 3, 2018
Tuesday–Saturday, 12–7pm

Opening Reception
Saturday,
October 6,
5–8 pm

Special thanks to the Kalakar Trust for their donation of the exhibition venue, The Gujral Foundation for their support, Karan Kaul for organizing 'Medium as Message': the Zine Corner, Abid Saifi for production, Pallavi Surana for research, and Vidisha Saini, Tej Haldule, Paris Furst, Léuli Eshraghi, Carole Dieterich, and Niha Masih for their invaluable help and feedback.

Identity & Printed Matter designed by November.

सावधान

Cover Image
Arko Datto, *Untitled,*
from the series *WILL MY MANNEQUIN BE HOME WHEN I RETURN,*
2016, Print on flex, 72 x 60 in

apexart
291 church street new york, ny 10013
t: 212.431.5270
info@apexart.org www.apexart.org

apexart is a 501(c)(3), not-for-profit organization and does not engage in sales or sales-related activities.
apexart is a registered trademark.

apexart's program supporters past and present include The Andy Warhol Foundation for the Visual Arts, The Buhl Foundation, Bloomberg Philanthropies, The Greenwich Collection Ltd., William Talbott Hillman Foundation/Affirmation Arts Fund, The Milton and Sally Avnet Foundation, The Peter Norton Family Foundation, the Consulate General of Israel in New York, the Kenneth A. Cowin Foundation, the Trust for Mutual Understanding, and public funds from the New York City Department of Cultural Affairs in partnership with the City Council and the New York State Council on the Arts with the support of Governor Andrew M. Cuomo and the New York State Legislature.

You can support what we do at apexart.org/support.php

apexart © 2018
ISBN: 978-1-946416-16-2

सावधान:THE REGIMES OF TRUTH

FEATURING ALT NEWS • ARKO DATTO • ASIM WAQIF • THE DALIT PANTHER ARCHIVE • JOHAR JHARGRAM • MANDEEP RAIKHY • PAYAL ARYA SARAH NAQVI • SAMAR GREWAL • SANKET JADIA • SMITA URMILA RAJMANE • THE WIRE • VIDEO VOLUNTEERS • VIDISHA SAINI • VISHAL KUMARASWAMY • ZINE

सावधान

CURATED BY SHAUNAK MAHBUBANI

OPENING 7 OCT–3 NOV 2018

ALLIES FOR THE UNCERTAIN FUTURES–2

apexart - New Delhi

SAAVDHAAN:
THE REGIMES OF TRUTH
CURATOR'S NOTE

A brightly decorated house is on fire. A loudspeaker sings shrill praises of the patriarch. No one is seen exiting the building. A singular woman fights the blaze. Is the rest of the structure empty, or have its inhabitants been convinced the flames are unreal? The dark times of authoritarianism have returned and fascists are out on the streets. A small glimmer of hope during these bleak days is the ability to see clearly, and thus prepare to counter, the otherwise obscured forces of what Michel Foucault has theorized as *disciplinary power*. He asserted that beginning in the Eighteenth Century, power structures transformed to exercise control over the mind—rather than the body—of the subject, cutting much deeper into all aspects of the individual's life.[1] Modern social institutions, such as education, healthcare, justice, and prison systems, incorporate these disciplinary terms which ensure citizens are carefully fabricated into the dictated social order.

Post-colonial theorist Sanjay Seth notes "parallels between the processes described by Foucault and developments in the colonial world, where new regimes of power-knowledge were used to rule conquered peoples and to map and sometimes remake the social field."[2] The colonial project of the institutionalization and acceptance of government law and bureaucracy has come full circle, as post-independence Indian governments now use these institutions to enforce their neo-imperialist agenda, and none as well as the current right-wing government. The Hindi word *Saavdhaan* (used both as a military call to attention as well as a neighborly hark of safety) viscerally captures the dichotomous tension that hangs over the country today, and is depicted in **Arko Datto's** nighttime photographs. Citizens can either get behind the marching band of the populist regime or live in a state of constant wariness pre-empting an attack around the corner, and whilst a third route exists, it is obfuscated by fear.

Mandeep Raikhy, *Attention!*,
2017, Performance, 58:00 min

The performance *Attention!* choreographed by **Mandeep Raikhy** with sound design by **Samar Grewal**, articulates through moving bodies the incessant beat of ideological messaging we are witnessing in India today. The ruling party, Bharatiya Janata Party (BJP) and its ideological mothership Rashtriya Swayamsevak Sangh have carefully deployed all forms of dissemination—from school textbooks to Whatsapp groups—to propagate their idea of hindutva, a movement that promotes militant Hindu nationalism and the establishment of a Hindu state. From cultural institutions to universities, to history itself, none are exempt from the voracious onslaught of saffronisation (a term that denotes the appropriation of Hindu culture and iconography, like the aesthetics of saffron robes, by political power seekers). Hindutva ideologues have been placed in leading positions at institutions like the Archeological Survey of India and the National Museum, and the Ministry of Culture has set up an official committee of bureaucrats, archaeologists, and Sanskritists to write a revisionist history of India.[3]

The BJP came into power in 2014 on the back of the larger than life figure of Narendra Modi, waving the promise of development, a narrative that they have been unable to bolster with metrics from the ground. Their strategies have spiraled into all sorts of media

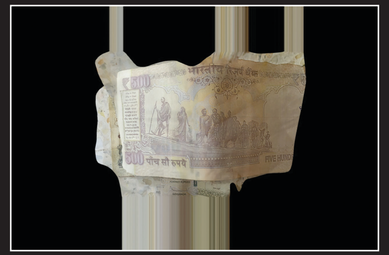

Vishal Kumaraswamy, *Steal from the Country*,
2017, Single channel video, 11:36 min (still)

histrionics from monogrammed suits to yoga videos—absurdities that look back at us in **Vidisha Saini's** absurdist-theatre interventions. In lieu of any tangible successes, politicians deployed distractions in the form of paid and fake news to uphold a shining facade. Analytics website *IndiaSpend* has reported that the government's declared advertising expenditures from 2014–2018 was so large it could have fed a midday meal for a year to 46 million children.[4] A larger threat presents itself in undeclared manipulations that have spun alternative realities, a strategy that Asim Waqif also uses to blur fact and fiction. The one-sided mainstream media narratives around Demonetization (a critical moment in 2016 when 86% of the country's bank notes were delegitimized) illustrate the state's control over TV and print outputs during an event of such national importance. **Vishal Kumaraswamy's** single-channel video installation assembles reports that lie outside these mass produced views to reveal the ripple effects of this pivotal move.

Controlling the media is easier when "friends" of the government, like Reliance Industries, have major stakes in the biggest media networks. Corporate pressure, along with threats to proprietors and systemic bullying, has spread an atmosphere of fear within media houses and their editors. This atmosphere, not limited to the media sphere, is further spread to all parts of society through the persistent machinery of the party's IT cell and Whatsapp Army. Muslims have been affected the most in what must be called out as an undeclared apartheid against the community. The ban on beef, defended as a protective measure for the "holy cow," has been the trigger for multiple public mob lynchings of Muslim men suspected of transporting or consuming beef. **Sarah Naqvi's** intimate crochet sculptures draw on her family's history, reminding us that violence against Muslims has always been an issue in post-independence India, but the lack of government condemnation against these acts solidified with the 2002 pogroms in Godhra has allowed such aggression without fear of consequence. **Sanket Jadia's** drawings investigate the politics of visibility in the media coverage of these incidences. Violence against Dalits and other lower-caste communities has been an abominable part of sub-continental life for centuries, and the atmosphere of rampant divisiveness and police inaction does nothing to alleviate this. The domination of upper-caste editors and journalists within newsrooms also means that Dalit narratives continue to be over-simplified and misinterpreted in situations like the Bhima-Koregaon violence in Maharashtra in 2018, coverage that **Smita Rajmane** analyzes in her archival installation.

Sarah Naqvi, باشعور / *Bashaoor*,
2018, Wool sculpture

This persistent onslaught of fear and misinformation is being systematically produced to undermine India's democratic process. These frameworks have become so entrenched that escaping them has become nearly impossible. Every time we choose safety over truth, intimidation over assertion, we surrender the little space we occupy as citizens, and weaken our democratic machinery. Journalist Ravish Kumar has described the fog of fear as a resting point between courage and rashness,[5] a visualization that finds itself in **Payal Arya's** mixed media installation.

I read some hope in Paranjoy Guha Thakurta imagination of the future of media as one with an abundance of journalists, not in the traditional sense, but rather as those who are "able to bring about greater transparency, less corruption and demand more accountability."[6] A few media groups are pushing towards this vision of information as a public good, seizing its power and placing it back with citizens. ***Video Volunteers***, with a network of over 250 community correspondents across the country, empowers individuals to take control of their narratives through the technology of video production. Over 5,700 videos have been created, covering urgent issues as well as stories of success. One of the last bastions in the media landscape, multilingual digital publication ***The Wire*** has been slapped

Video Volunteers, Community Training in West Bengal, 2016

with multiple defamation cases from both political and corporate players thanks to its exemplary investigative journalism. Editorially and financially independent, one hopes the organization can ward off the political pressures and systemic inadequacies faced by media networks. Set up by an engineer turned media-vigilante, ***AltNews*** takes on one of the more dangerous tools in the neo-fascist arsenal: fake news. Using both digital and traditional investigative methods, the team has been instrumental in capping the spread of harmful fabrications across party lines.

Literature has always been one of the key elements of Indian resistance movements, but its posterity has been subject to the same powers it seeks to fight. In the 1970s an upsurge of Dalit literature was instrumental in creating the radical Dalit Panthers (inspired by the Black Panthers), but most of this material remains inaccessible to the public. ***The Dalit Panther Archive*** is committed to digitizing the archive of writings, magazines, and other materials from this movement. The little magazine movement also erupted in India within and around the Dalit Panthers movement. The format, now popularly called the **zine**, has grown in recent usage with illustrators, poets, and artists drawn to its subversion of capital and censorship. RJ Shikha Mandi evokes narratives in a different format through her radio show, ***Johar Jhargram***, spreading the Santhal Indigenous language and culture. The show broadcast entirely in Santhali, marries social issues with humor and village music, making it a big hit with local communities.

Moving from vigilance, I take you now to another translation of attention—*dhyaan*—meaning care. I move forward within these dark times with the hope that they will open us up to caring beyond our imagined communities, beyond ourselves. I hope our ideas of futures beyond here reflect a careful commitment to plurality over the dissemination of divisiveness. Whether it's through our phones, computers, or other technologies, we are no longer just passive consumers within the realms of information. Every post, every shared image is another particle of charge constituting the invisible layers of power-knowledge. As hyper-connected prosumers, are we ready to wake up to our responsibility and own up to our complicity?

1 Michel Foucault, *Discipline And Punish: the Birth of the Prison* (New York: Pantheon Books, 1977).

2 Sanjay Seth, "Foucault in India", in *Foucault and the History of Our Present*, Eds. Sophie Fuggle, Yari Lanci, Martina Tazzioli, (London: Palgrave Macmillan, 2015), 43-57.

3 Rupam Jain and Tom Lasseter, "Special Report: By rewriting history, Hindu nationalists aim to assert their dominance over India," *Reuters*, March 6, 2018, accessed August 17, 2018. https://reut.rs/2Bttq5Q

4 Shreya Raman, "Govt Ad Spend Could Feed 46 Million Children Mid-Day Meals For A Year," *IndiaSpend*, August 10, 2018, accessed August 17, 2018, https://bit.ly/2BeqsSk.

5 Ravish Kumar, *The Free Voice*, (New Delhi: Speaking Tiger, 2018).

6 Paranjoy Guha Thakurta, "Future of alternative media in India," in *Alternative Futures: India Unshackled*, Ed. K.J. Joy and Ashish Kothari, (India: AuthorsUpFront, 2017), 460-479.